National Conference on the topic of "Technological Developments and Changing Dimensions of Law April 13-14, 2019

Conference on Technological Developments & Changing Dimensions of Law

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 13 Apr: The ICFAI University is organizing a National Conference on the topic of Technological Developments and Changing Dimensions of Law on 13th & 14th April. The Conference aims at having a healthy intellectual discussion on topics pertaining to the agenda of the Conference.

Addressing the conference on the first day, the Chief Guest for the Inaugural Session, Justice L. Nageswara Rao, a sitting Judge of the Supreme Court of India said, "Whether it is the technological development in the investigative methods or in the field of technical and record keeping work, technology is having a vast impact on our dynamic justice system. Students should take interest in understanding how technology improves the efficiency of their work and performance in court. The judiciary is focusing upon creating paperless courts and facilities like e-filing which is now being introduced in many courts for the citizens. Brain mapping and narco analysis are also used for investigation and the results are always corroborated with the story and circumstantial evidence for judgment. On one hand, mobile phone records and information in the computers of the accused are used in courts for cross questioning and on the other use of mobile phones have also caused major concerns for protection of privacy of individuals. Therefore knowing the law is not enough for the students of law, the use of technology for improving knowledge and the knowledge of technological developments itself is important for helping the society".

The Chief Guest of the Valedictory session is Justice Siddhartha Verma, a sitting judge in the High Court of Judicature at Allahabad.

The Guest of Honour of the session was Padmashree Dr. Anil Joshi, the founder of Himalayan Environmental Studies and Conservation Organization.

The guest of honor & key note Speaker was Prof. RK Murali, Faculty of Law, BHU, Varanasi.

Other guests of honor were Prof. Priti Saxena from School for Legal Studies, BBAU Central University, Lucknow and Dr. Yogesh P. Singh from National Law University, Cuttack, Odisha.

Garhwal Post

प्रौद्योगिकी न्याय प्रणाली पर प्रभाव डाल रही : राव

कार्यक्रम

❑ आईसीएफएआई विवि में सेमिनार आयोजित

प्रभात ब्यूरो

विकासनगर। आईसीएफएआई विश्वविद्यालय में तकनीकी विकास व कानून के बदलते आयाम पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित की गई। सेमीनार में मुख्य अतिथि भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने कहा कि जांच के तरीकों में तकनीकि विकास हो या रिकार्ड रखने के काम के क्षेत्र में हो प्रौद्योगिकी हमारे गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाल रही है। न्याय पालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है और नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही है।आईसीएफएआई विश्वविद्यालय मे दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का मुख्य अतिथि सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश नागेश्वर राव ने दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया। पूर्व न्यायाधीश राव ने कहा कि छात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिकी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। कहा कि विभिन्न मामलों में जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नार्को एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है। एक तरफ मोबाइल फोन रिकॉर्ड और अभियुक्तों के कंप्यूटर में जानकारी का उपयोग पूछताछ के लिए अदालतों में किया जाता है। वहीं मोबाइल फोन के दूसरे उपयोग पर भी

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि। प्रभात

व्यक्तियों की गोपनीयता की सुरक्षा के लिए प्रमुख चिंताएं है। इसलिए कानून को जानना कानून के छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है बल्कि ज्ञान में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग और तकनीकी विकास का ज्ञान ही समाज की मदद के लिए महत्वपूर्ण है। इस मौके पर गेस्ट ऑफ ऑनर एंड की-नोट स्पीकर के रूप में प्रो0 आरके मुरली फैकल्टी ऑफ लॉ बीएचयू वाराणसी उपस्थित थे। अन्य अतिथियों के रूप में स्कूल फॉर लीगल स्टडीज बीबीएयू केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ से प्रो. प्रीति सक्सेना, प्रो. डॉ. राकेश बहुगुणा, प्रधानाचार्य लॉ कॉलेज देहरादून, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी कटक ओडिशा के डॉ. योगेश पी सिंह, शामिल हुए। प्रो. डॉ. पवन के अग्रवाल, कुलपति आईसीएफएआई विश्वविद्यालय देहरादून, प्रमुख संरक्षक वाइस चांसलर प्रो.डॉ. मुद्दु विनय, प्रो.डॉ. युगल किशोर, मोनिका खारोला, निदेशक, डॉ. सागर के जायसवाल, अभिषेक राज, रुदेश श्रीवास्तव, अंकित राज, सौरभ शेखर, करन उपाध्याय, मुस्कान अग्रवाल, अपूर्वा सिन्हा, जान्वी पाण्डे, आयुषी श्रीवास्तव, सौरभ राजपूत , आईसीएफएआई विश्वविद्यालय के अन्य छात्र शामिल रहे। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय विधि विवि जलंधर विश्वविद्यालय सहित सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

Prabhat

तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल. नागेश्वर राव ने किया सम्मेलन का उद्घाटन

Uttar Ujala

तकनीक मददगार है पर घातक भी: जस्टिस नागेश्वर

आईसीएफएआई लॉ कालेज में जस्टिस एल नागेश्वर राव ने संगोष्ठी का शुभारंभ किया।

देहरादून | हमारे संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव ने कहा है कि तकनीक विकास से हर क्षेत्र में सुविधाएं बढ़ी हैं, लेकिन यह घातक भी है। मोबाइल फोन रिकॉर्ड, कंप्यूटर आदि चीजें अदालतों में पूछताछ और सबूत के तौर पर इस्तेमाल होती हैं। लेकिन बड़ी मोबाइल फोन और कंप्यूटर आज के समय में आपकी जानकारी चुराने का सबसे बड़ा जरिया बन चुके हैं। यह शनिवार को आईसीएफएआई लॉ कॉलेज में राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर संबोधित कर रहे थे।

आईसीएफएआई लॉ कॉलेज में तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ शनिवार को हुआ। सम्मेलन में देशभर के 65 से ज्यादा लॉ विवि और कॉलेज के छात्र हिस्सा ले रहे हैं। सम्मेलन में शामिल शिक्षक और छात्रों ने देश की कानून व्यवस्था और केस स्टडी के आधार पर शोध पत्र पेश किए।

न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव ने कहा कि व्यक्तिगत गोपनीयता पर बिना जानकारी दिए नजर रखना गलत है। कानून को जानना ही कानून के छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है। ज्ञान में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का सही उपयोग भी सीखना होगा। न्यायपालिका को पेपरलेस कोर्ट बनाना, ई-फाइलिंग की सुविधा प्रौद्योगिकी के सकारात्मक पहलू हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि वीएचवी के प्रोफेसर आरके मुरली, प्रोफेसर प्रीति सक्सेना, प्रोफेसर राजेश बहुगुणा, डा. योगेश पी सिंह, डा. ए शामिल हुए। आईसीएफएआई विवि दून के कुलपति डा. पवन के अग्रवाल, डा. मृदुल विनय, डा. युगल किशोर, मोनिका खारोला, डा. सागर के जायसवाल मौजूद रहे।

छात्राओं को नशे की लत के खिलाफ जागरूक किया

देहरादून। परि फाउंडेशन ने शनिवार को राजपुर रोड स्थित पूर्व माध्यमिक बालिका स्कूल में नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाया। साथ ही छात्राओं को स्वास्थ्य और मासिक धर्म से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं। परि फाउंडेशन की संस्थापक डा. सोना कौशल गुप्ता ने कहा कि किशोरावस्था में मन सबसे ज्यादा चंचल होता है। इसी अवस्था में बौद्धिक क्षमताओं को एकाग्र कर इसका इस्तेमाल सकारात्मक कार्यों में करना सीख लेना चाहिए। उन्होंने छात्राओं को नशे से दूर रहने पर जोर दिया। कहा कि नशा मानव शरीर के लिए सबसे ज्यादा घातक होता है।

Hindustan

गतिशील न्याय प्रणाली पर प्रभाव डाल रही है प्रौद्योगिकी: नागेश्वर राव

समारोह में स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए अतिथि। छाया दर्पण

Shah Times

इक्फाई यूनिवर्सिटी में नेशनल सेमिनार में शामिल स्टूडेंट्स.

टेक्नोलॉजी के मिसयूज से पर्यावरण को खतरा : वर्मा

नेशनल सेमिनार में बोले इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज

DEHRADUN (14 April): संडे को इक्फाई यूनिवर्सिटी में तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर हुए दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का समापन हो गया है. समापन सत्र में इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज सिद्धार्थ वर्मा ने शिरकत की.

सही यूज हो टेक्नोलॉजी का

जज सिद्धार्थ वर्मा ने कहा कि हमारे देश में कानूनों को पर्यावरणीय चुनौतियों और बदलती टेक्नोलॉजी को ध्यान में रखते हुए विकसित करना है. टेक्नोलॉजी के मिस यूज ने नागरिकों और पर्यावरण के लिए चुनौतियां पैदा की हैं और इसलिए न्यायपालिका को हमारे आसपास बदलती टेक्नोलॉजी के साथ बदलना है. एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण कानून के छात्रों के लिए बहुत जरूरी है और उन्हें टेक्नोलॉजी का गुलाम नहीं बनना चाहिए. इस दौरान पेपर प्रेजेंटर का अवार्ड पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी कृष्णा गोयल और गर्विता अग्रवाल, बेस्ट पोस्टर का पुरस्कार इक्फाई यूनिवर्सिटी की गायत्री थापा को दिया गया. इस सत्र के गेस्ट डॉ.अनिल जोशी ने कहा कि भारत के गांवों से होकर गुजरने वाली और बहने वाली हर नदी एक पवित्र नदी की तरह है और इसलिए इसे संरक्षित किया जाना चाहिए. जिस तरह से हम जीडीपी की गणना करते हैं, उसी तरह से गणना सकल पर्यावरण उत्पाद की आवश्यकता है.

I-Next

प्रौद्योगिकी न्याय प्रणाली को कर रही प्रभावित

राष्ट्रीय सम्मेलन

- इक्फाई विवि में तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर सम्मेलन
- सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने सम्मेलन का किया उद्घाटन

जागरण संवाददाता, विकासनगर : इक्फाई विवि सेलाकुई में तकनीकी विकास व कानून के बदलते आयाम विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए छात्र-छात्राओं को कानून के टिप्स दिए। न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने कहा कि चाहे जांच के तरीकों में तकनीकी विकास हो या रिकॉर्ड रखने के काम के क्षेत्र में, प्रौद्योगिकी हमारी गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाल रही है।

उन्होंने कहा कि छात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिकी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। न्यायपालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है और नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही हैं। जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नार्को एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है और परिणाम हमेशा कहानी और निर्णय के लिए परिस्थिति के अनुसार साक्ष्य के साथ मिलाए जाते हैं। एक तरफ, मोबाइल फोन रिकॉर्ड और अभियुक्तों के कंप्यूटर में जानकारी का उपयोग पूछताछ के लिए अदालतों में किया जाता है और मोबाइल फोन के दूसरे उपयोग पर भी व्यक्तियों की गोपनीयता की सुरक्षा के लिए प्रमुख चिंताएं हैं। इसलिए कानून को जानना, कानून के छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है, ज्ञान में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग और तकनीकी विकास का ज्ञान ही समाज की मदद के लिए महत्वपूर्ण है। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. आरके मुरली फैकल्टी ऑफ लॉ बीएचयू वाराणसी ने छात्र-छात्राओं को कानून की जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति इलाहाबाद सिद्धार्थ वर्मा मौजूद रहेंगे। कार्यशाला में लखनऊ से प्रो. प्रीति सक्सेना, प्रो. डॉ. राजेश बहुगुणा प्रधानाचार्य लॉ कॉलेज देहरादून, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी कटक ओडिशा के डॉ. योगेश पी सिंह, प्रो. पवन के अग्रवाल कुलपति, प्रो-वाइस चांसलर प्रो. मुड्डू विनय, प्रो. युगल किशोर, मोनिका खारोला, डॉ. सागर के जायसवाल, अभिषेक राज, रूद्रेश श्रीवास्तव, अंकित राज, सौरभ शेखर, करन उपाध्याय, मुस्कान अग्रवाल, आयुषी श्रीवास्तव, सौरभ राजपुत आदि मौजूद रहे।

Dainik Jagran

सम्मेलन में कानून के बदलते आयाम पर चर्चा

भास्कर समाचार सेवा

• न्यायाधीश एल. नागेश्वर राव ने किया उद्घाटन

देहरादून। आईसीएफएआई विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय 'तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम' विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में कानून के क्षेत्र में हो रहे तकनीकी प्रगति के बारे में चर्चा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल. नागेश्वर राव ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए, उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि एल नागेश्वर राव ने बताया कि प्रौद्योगिकी हमारे गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाल रही है। छात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिकी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। न्यायपालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है और नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही हैं। जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नार्को एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है और परिणाम हमेशा कहानी और निर्णय के लिए परिस्थिति के अनुसार साक्ष्य के साथ मिलाये जाते हैं।

Dainik Bhaskar

'न्याय के क्षेत्र में तकनीकी का अहम योगदान'

देहरादून। तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम विषय पर इक्फाई विवि में दो दिवसीय सम्मेलन शनिवार को शुरू हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल. नागेश्वर ने किया।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में न्याय के क्षेत्र में तकनीकी का अहम योगदान है। मुकदमों की विवेचना हो या न्यायालयों में रिकॉर्ड रखने की बात सभी जगह प्रौद्योगिकी अपना रोल अदा कर रही है। मौजूदा समय में पेपरलेस कोर्ट बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इस समय कुछ अदालतों में ई-फाइलिंग का काम भी शुरू हो गया है। कार्यक्रम में 65 से अधिक विवि के छात्र-छात्राओं और 330 शोधकर्ताओं ने भाग लिया। शनिवार के कार्यक्रम का समापन उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा ने किया।

इस अवसर पर स्कूल फॉर लीगल स्टडीज लखनऊ की प्रोफेसर प्रीति सक्सेना, प्रोफेसर डॉ. राजेश बहुगुणा प्रधानाचार्य लॉ कॉलेज देहरादून, नेशनल लॉ विवि कटक ओडिशा के डॉ. योगेश पी. सिंह आदि उपस्थित रहे। ब्यूरो

Amar Ujala

प्रौद्योगिकी का गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव: राव

सम्मेलन में विचार व्यक्त करते विशेषज्ञ।

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

इक्फाई विश्वविद्यालय में 'तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हो गया। सम्मेलन में विशेषज्ञों ने मुख्य रूप से न्याय प्रणाली में तकनीकी विकास पर चर्चा की गई। साथ ही तकनीकी विकास को समाज के लिए महत्वपूर्ण बताया गया। सम्मेलन में 62 से अधिक विश्वविद्यालयों के 330 शोधकर्ता व छात्र भाग ले रहे हैं।

शनिवार को इक्फाई परिसर में आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने किया। उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि श्री राव ने प्रौद्योगिकी देश के गतिशील न्याय प्रणाली में व्यापक प्रभाव डाल रही है। जांच से लेकर रिकार्ड रखने तक हर जगह प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

इसके तहत नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही हैं। जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नार्को एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है। परिणाम हमेशा कहानी और निर्णय के लिए परिस्थिति के अनुसार साक्ष्य के साथ मिलाये जाते हैं।

इक्फाई विवि में तकनीकी विकास व कानून के बदलते आयाम पर चर्चा

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने तकनीकी विकास को बताया समाज के लिए महत्वपूर्ण

उन्होंने कहा कि मोबाइल फोन रिकार्ड और अभियुक्तों के कंप्यूटर में जानकारी का उपयोग पूछताछ के लिए अदालतों में हो रहा है। उन्होंने कहा कि कानून को जानना ही छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है।

सम्मेलन में बतौर विशिष्ट अतिथि बीएचयू के प्रो. आरके मुरली, स्कूल फॉर लीगल स्टडीज बीबीएयू केंद्रीय विश्वविद्यालय (लखनऊ) से प्रो. प्रीति सक्सेना, लॉ कालेज देहरादून के प्राचार्य डा. राजेश बहुगुणा, नेशनल ला यूनिवर्सिटी कटक (ओडिशा) के डा. योगेश पी. सिंह, इक्फाई विवि के कुलपति प्रो. (डा.) पवन के. अग्रवाल, प्रो-वाइस चांसलर प्रो. (डा.) मुदु विनय, डा. युगल किशोर, श्रीमती मोनिका खारोला, डा. सागर के. जायसवाल, अभिषेक राज आदि ने विचार विचार व्यक्त किये।

सम्मेलन के आयोजन में रुद्रेश श्रीवास्तव, अंकित राज, सौरभ शेखर, करन उपाध्याय, मुस्कान अग्रवाल, अपूर्वा सिन्हा, जानवी पाण्डे, आयुषी श्रीवास्तव, सौरभ राजपूत समेत अनेक छात्रों ने सहयोग दिया। 14 अप्रैल को समापन समारोह में उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायाधीश सिद्धार्थ वर्मा बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहेंगे।

Rashtriya Sahara

न्यायपालिका को पेपरलेस बनाना प्राथमिकता

देहरादून, सुनील तलवाड़ (पंजाब केसरी): आईसीएफएआई विश्वविद्यालय द्वारा तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने किया। उन्होंने कहा कि चाहे वह जांच के तरीकों में तकनीकी विकास हो या रिकॉर्ड रखने के काम के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हमारे गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाल रही है। उन्होंने कहा कि छात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिकी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। न्यायपालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है और नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही हैं। जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नार्को एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है और परिणाम हमेशा कहानी और निर्णय के लिए परिस्थिति के अनुसार साक्ष्य के साथ मिलाये जाते हैं। एक तरफ, मोबाइल फोन रिकॉर्ड और अभियुक्तों के कंप्यूटर में जानकारी का उपयोग पूछताछ के लिए अदालतों में किया जाता है और मोबाइल फोन के दूसरे उपयोग पर भी व्यक्तियों की गोपनीयता की सुरक्षा के लिए प्रमुख चिंताएं हैं। इसलिए कानून को जानना, कानून के छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है, ज्ञान में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग और तकनीकी विकास का ज्ञान ही समाज की मदद के लिए महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय सम्मेलन

- कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग की सुविधा जल्द शुरू होगी
- प्रौद्योगिकी के उपयोग से न्यायपालिका की दक्षता में आएगा सुधार

सम्मेलन में कई विशेषज्ञों ने लिया हिस्सा

गेस्ट ऑफ ऑनर एंड को-चेयर स्पीकर के रूप में प्रो. आर.के. मुरली, फैकल्टी ऑफ लॉ, बी.एच.यू., वाराणसी, अन्य अतिथियों के रूप में स्कूल फॉर लीगल स्टडीज, बीबीएयू केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ से प्रो. प्रीति सक्सेना, प्रो. डॉ राजेश बहुगुणा, प्रधानाचार्य लॉ कॉलेज देहरादून, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, कटक, ओडिशा के डॉ योगेश पी सिंह, शामिल हुए। सम्मेलन में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, यूपीईएस लॉ कालेज देहरादून, सीएमआर, एमिटी, यूआईटी के 65 से अधिक विश्वविद्यालयों के छात्रों, शोधकर्ताओं और विद्वानों सहित लगभग 330 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दून में आयोजित सेमीनार का शुभारंभ करते अतिथिगण। (छाया-पंजाब केसरी)

Punjab Kesari